Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ के प्रशासन में भारत की भूमिका

डॉ. अमित कुमार सहायक अध्यापक, जी. पी. एस., किशनपुर, सितारगंज, उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड.

ABSTRACT:

''यद्यपि अतीत में भारत को मुख्य रूप से एक विकासशील राष्ट्र के रूप में देखा जाता था, तथापि पिछले दशक में इसका वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र यह संकेत देता है कि भारत क्षेत्रीय, वैश्विक, आर्थिक, शैक्षिक, स्वास्थ्य, पर्यावरण और राजनीतिक परिदृश्य में अपने लिए एक नया प्रशासनिक सुधार का मार्ग तैयार कर रहा है। प्रशासनिक सुधार के इसी क्रम में ग्लोबल साउथ के एक मार्गदर्शक के रूप में, भारत ने रणनीतिक रूप से खुद को महत्वपूर्ण भूमिका में स्थापित किया है, जिसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में भारत को विभिन्न उपलब्धियों का श्रेय प्राप्त हुआ है। भारत की विदेश रणनीतियाँ, विश्व शान्ति, अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए जारी कार्य इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि भारत ग्लोबल साउथ में एक प्रशासक की भूमिका में विकसित हो रहा है।"

KEYWORDS:

भारत, ग्लोबल साउथ, विदेश नीति, प्रशासन।

प्रस्तावना-

भारत अपनी विदेश नीति के अन्तर्गत विश्व में पश्चिम को संतुलित करने के प्रयास में और उत्तर पर नजर रखते हुए भारत दक्षिण देशों के प्रशासनिक सुधार की भूमिका निभा रहा है।[1] हाल ही में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन 2023 में भारत ने पश्चिम देशों में शान्ति, आर्थिक उन्नति, स्वास्थ्य शिक्षा रोजगार आदि महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार रखें है तथा गरीबी, आर्थिक असमानता से जूझ रहे राष्ट्रों की उन्नति के लिए आवश्यक कदम उठाये है। यह सम्मेलन भारत को उन राष्ट्रों के वैश्विक समूह के साथ फिर से जोडने का प्रयास है जो शीत युद्ध की समाप्ति के बाद भारत की विदेश नीति के राष्ट्रों की सूची से हट गये थे। पिछले तीन दशकों में भारतीय विदेश नीति का ध्यान अपने वृहद शक्ति सन्तुलन, पडोसी देशों में स्थिरता लाने विस्तारित पड़ोस में क्षेत्रीय संस्थानों को विकसित करने पर रहा है।[2]

उद्देश्य- ग्लोबल साउथ के प्रशासक की भूमिका के लिए भारत द्वारा किये गये कार्यों का अध्ययन करना।

ग्लोबल साउथ के प्रशासन के लिए भारत द्वारा किये गये कार्य:- विश्व, शान्ति, मैत्री, आर्थिक विकास, पर्यावरण, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि बिन्दुओं को ध्यान में रखकर ग्लोबल साउथ के विकास के लिए भारत द्वारा निम्नलिखित कार्य किये गये है-

1.नई दिल्ली घोषणा:- भारत ने जी-20 सदस्यों के बीच आम सहमति बनाने के लिए जिससे ऋण वित्तपोषण, जलवायु न्याय और लैंगिक समानता जैसे ग्लोबल साउथ के मुद्दों को सम्मिलित किया है तथा उनकी घोषणा की है।

2.जी-20 शिखर सम्मेलन का विस्तार:- भारत ने अफ्रीकी संघ को सम्मिलित करके जी-20 के उच्च पटल पर ग्लोबल साउथ सदस्यों को आवाज देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।[3]

3.वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन:- भारत, ग्लोबल साउथ देशों के बीच एकजुटता बनाने के लिए वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन का आयोजन किया है, क्योंकि ये देश अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रहे है।

4.वैक्सीन मैत्री:- कोविड-19 के मद्देनजर भारत ने निःशुल्क वैक्सीन और दवाइयां उपलब्ध कराकर ग्लोबल साउथ देशों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

5.अधिक प्रतिनिधि बहुपक्षीय मंच:- भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों को सम्मिलित करके ब्रिक्स, एससीओं जैसे अन्य बहुपक्षीय मंचों को अधिक प्रतिनिधि बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जैसे-ब्रिक्स को ब्रिक्स प्लस में बदलना।

6.जलवायु न्याय:- भारत दक्षिण साउथ के हितो को बढ़ावा देने के लिए जलवायु वार्ता में प्रमुख नेतृत्व की भूमिका को निभा रहा है, जैसे- हाल ही में COP28 में हानि और क्षति कोष की स्थापना की गई है।[4]

ग्लोबल साउथ की भूमिका के रूप में जी-20 शिखर सम्मेलन में भारत द्वारा उठाये गये प्रमुख विषय:-

1 दिसम्बर 2022 को जब भारत ने जी-20 की अध्यक्षता संभाली थी, तो भारत ने देश की एक साल की अध्यक्षता के लिए कई दृष्टिकोण निर्धारित किये उनमें एक ग्लोबल साउथ भी था। ग्लोबल साउथ का इस्तेमाल एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों के लिए किया जाता है। ग्लोबल साउथ के प्रशासन के लिए भारत ने ग्लोबल साउथ के देशों से सम्बन्धित मुद्दों को अन्तराष्ट्रीय मंचों, जी-20 समिट तथा सयुक्त राष्ट्र संघ की बैठकों और सम्मेलन में उठाया है। नई दिल्ली के जी-20 शिखर सम्मेलन में भारत अफ्रीकी संघ को स्थाई सदस्यता दिलाने में सफल रहा है। भारत ने ग्लोबल साउथ के लिए ऋण स्थिरता सुनिश्चित करने के और उसे ऋण जाल से बचाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संरचना में सुधार के लिए वैश्विक प्रयास का आवाह्न किया था। जी-20 शिखर सम्मेलन में भारत ने यूक्रेन में युद्ध के परिणामस्वरूप ऋण समस्या और ईधन, खाद्य और उर्वरकों की बढ़ती कीमतों सहित ग्लोबल साउथ के देशों के सामने आने वाले विभिन्न मुदों पर अपनी चिन्ता व्यक्त की थी। आर्थिक असमानता, राजनैतिक अस्थिरता, बुनियादी सुविधाओं का अभाव, जलवायु परिवर्तन, सीमित मानव क्षमता आदि ग्लोबल साउथ देशों के मुद्दों को भारत ने प्रमुखता से जी-20 शिखर सम्मेलन में उठाने का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त कोविड माहमारी के दौरान, मेक इन इण्डिया टीके लगभग 100 देशों को भेजे गये और इस अवधि के दौरान लगभग विश्व के 150 देशों ने भारत से ये टीके आयात किये।[5]

सुझाव-

1. भारत को ग्लोबल साउथ के विकास में अपनी भूमिका को और अधिक बढ़ाने लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थाई सदस्य बनने का प्रयास करना चाहिए।

2. भारत को संयुक्त राष्ट्र, एशियाई विकास बैंक, जी-20, औद्योगिक राष्ट्र, गुटरिपेक्ष आन्दोलन आदि अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की होने वाली वार्षिक बैठकों का आयोजन भारत में कराने एवं स्वयं उसकी अध्यक्षता करने के प्रयास करने चाहिए।

निष्कर्ष-

विगत दशकों में भारत ग्लोबल साउथ में एक महाशक्ति के रूप में विकसित हो रहा है। ग्लोबल साउथ के देशों के उपर आने वाले किसी भी संकट में भारत अपनी सक्रिय भूमिका को निभा रहा है। ग्लोबल साउथ के प्रशासन में भारत की भूमिका में राजनीतिक नेतृत्व, आर्थिक सहयोग, विकास सहायता, दक्षिण-दक्षिण सहयोग, डिजिटल कूटनीति, जलवायु नेतृत्व और सांस्कृतिक आदान-प्रदान सम्मिलित है। भारत की सक्रिय भागीदारी और कार्य ग्लोबल साउथ की सामुहिक सफलता और विकास में योगदान करता है। ग्लोबल साउथ में इसकी उन्नति को सम्मिलित करने वाली इसकी कई नीतियां और रणनीतियां इसका प्रमाण है। ग्लोबल साउथ में भारत की यह उन्नति उसे एक दिन निश्चय ही सयुक्त राष्ट्र संघ की स्थाई सदस्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

REFERENCES

1. सोनी सुरेशः वर्तमान वैश्विक परिदृश्य एवं भारत की भूमिका, ज्ञान गंगा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या 5.

2. कुमार सुरेशः एएमबी, इण्डिया एवं ग्लोबल साउथ, प्रैसपैक्ट एण्ड जैलेनजेस, पृष्ठ संख्या 1, 3.

3. डारजिन जसटिनः दा साइस ऑफ दा ग्लोबल साउथ, हारवर्ड यूनिवर्सिटी यूएसए, पृष्ठ संख्या 7,8.

4. डॉ. फड़िया कुलदीपः अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा, पृष्ठ संख्या 9.

5. सिह उदयभानः अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विविध आयाम मुद्दे और चुनौतियाँ, पृष्ठ संख्या 11,12.